आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received:25/06/2024; Accepted:26/06/2024; Published:26/06/2024

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना

[1]निर्मला जोशी, [2]नवीन नाथ

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर,

[2]शोधार्थी

हिन्दी विभाग,

स.भ.सिं.राज.स्ना.महाविद्यालय रूद्रपुर,

ऊ.सिं. नगर (उत्तराखण्ड)

[1]निर्मला जोशी, [2]नवीन नाथ,**श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 2/जून 2024, (157-162)

[1]निर्मला जोशी, असिस्टेंट प्रोफेसर, **[2]नवीन नाथ**, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, स.भ.सिं.राज.स्ना.महाविद्यालय रूद्रपुर, ऊ.सिं. नगर (उत्तराखण्ड)

प्रस्तावनाः-

भारत एक सुसंस्कृत विस्तृत लोकतांत्रिक देश है। यह अपने आप में राजनीतिक विरासत के कारण विश्व का महान् लोकतंत्र है। विश्व स्तर पर किसी भी देश का राजनीतिक चिंतन उस देश का सुशिक्षित वर्ग ही करता है। भारतीय राजनीतिक चिन्तन को पश्चिमीकरण का अनुकरण माना जाता है। हर नागरिक की राष्ट्र निर्माण में भागीदारी होती है। किसी भी देश का लोकतंत्र वहाँ की भीड़ से नहीं,अच्छे नागरिकों से सफल होता है। आज भारतीय राजनीति सेवामय न होकर सत्तामय हो गई है। हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था जनतंत्र पर आधारित है। भारत की राजनीतिक चेतना आध्यात्मिक और विश्वमयी है। विश्व का कोइ भी साहित्यकार,उपन्यासकार या राजनीतिज्ञ हों,उसमें किसी न किसी प्रकार का हुनर होता ही है। सत्यं,शिवं,सुन्दरम् की भावना उसमें विकसित होती है। किसी भी साहित्य के राजनीतिक अध्ययन में साहित्य सामग्री को शामिल करने का सबसे स्पष्ट और उचित औचित्य ऐतिहासिक माना जाता है। श्रीलाल शुक्ल हिन्दी उपन्यास साहित्य के सशक्त राजनीतिक व्यंग्यकारों में से एक हैं। उन्होंने रोचक तरीके से उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना पर करारी चोट की है।

राजनीतिक चेतना अर्थ एवं परिभाषाः-

साहित्य राजनीतिक चेतना में सांस लेता है। किसी भी देश की राजनीतिक चेतना की परिभाषा उस देश की भौगोलिक वातावरण एवं संस्कृति पर आधारित होती है। चेतना ज्ञान नहीं समस्या समाधान के तरीके को देखती है। चेतना में प्रायः यह देखा जाता है कि आप किसी समस्या को किस तरह से दूर करने का दृष्टिकोण रखते हैं। यह शरीर के बिना निर्जीवधारी है। चेतना व्यक्ति के अंतर्निहित ज्ञान को बाहर निकालती है।

राजनीति शब्द का निर्माण संस्कृत के राज और नीति दो शब्दों से मिलकर हुआ है। राज का अर्थ हुआ-शासन करना,अपना वर्चस्व दिखाना। नीति शब्द की उत्पत्ति नय् धातु से हुई है, इसका अर्थ हुआ- ले जाना,अर्थात वह नियम जो आगे की ओर ले जाता है। राजनीति अंग्रेजी पालिटिक्स(politics) शब्द से बना है। पोलिटिक्स यूनानी शब्द पोलिस (polis) का रूप है, इसका अर्थ हुआ-नगर। राजनीति से तात्पर्य-देश,राज्य तथा राज्य की शासन प्रणाली से है। इस प्रकार विभिन्न विद्वानो ने राजनीति की परिभाषाएं दी हैं-

अब्राहिम लिंकन ने राजनीति की परिभाषा इस प्रकार दी है-"प्रजातंत्र जनता की,जनता के लिये और जनता द्वारा सरकार है।"[1]

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी शसन प्रणाली होती है। किसी भी देश में दूसरे राष्ट्र की शासन व्यवस्था नहीं चल सकती। राजनीतिक व्यवस्था का गठन करने में राजनीति की अहम् भूमिका होती है। वह कार्यालयों,स्कूलों,कालेजों,मंदिर,मस्जिदों सभी जगहों पर विशेष रूप से लागू होती है।

डॉ. परमात्मा शरण राजनीति को सामाजिक व्यवहार का रूप मानते हैं। राजनीति के संबंध में उनका विचार है- "राजनीति एक प्रकार की गतिविधि या मानव व्यवहार है,यह सामाजिक व्यवहार का एक रूप है,जैसे आर्थिक व्यवहार भी सामाजिक व्यवहार का एक रूप है।"[2]

इस प्रकार राजनीति में भ्रष्टाचार और अराजकता को सुव्यवस्थित करने के लिये राजनीतिक शासन व्यवस्था की आवश्यकता होती है।

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतनाः-

मानव एक राजनीतिक प्राणी है। वह राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेता है। उससे स्कूल,कालेज,प्रशासन,समाज सुधारक तथा अन्य संस्थाएं प्रभावित होती हैं। आज जातिवाद,वंश-परंपरा,भाई-भतीजावाद,भ्रष्टाचार,प्रशासन,चुनाव,शिक्षा,पदलोलुपता, गुटबंदी राजनीति के

लोकप्रि्य क्षेत्र बन गये हैं। श्रीलाल शुक्ल ने सूनी घाटी का सूरज,अज्ञातवास, राग दरबारी,आदमी का जहर,मकान,पहला पड़ाव,विस्रामपुर का संत,इत्यादि उपन्यासों में राजनीति पर गहरी चोट की है। भारतीय राजनीति में वंश-परंपरा का अत्यधिक महत्व है। हमारे देश की लोकतांत्रिक प्रणाली राजनीतिक है। वैद्य जी शिवपालगंज के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। वह पूरे गाँव की सत्ता अपने वश में करते हैं। रूप्पन बाबू अट्ठारह साल के शिवपालगंज में छंगामल इण्टर कालेज के स्थानीय नेता हैं। रूप्पन बाबू के राजनीतिक संदर्भ में श्रीलाल शुक्ल कहते हैं-"वे पैदायशी नेता थे,क्योंकि उनके बाप भी नेता थे। उनके बाप का नाम वैद्य जी था।"[3]

भारतीय भ्रष्ट राजनीति में अवसरवादिता काफी बढ गई है। आज के राजनेता अपना ही अवसर देखते हैं। किसी दूसरे व्यक्ति समाज का नहीं। वैद्य जी शिवपालगंज के ऐसे नेता हैं,जो भ्रष्ट राजनीति पर संघर्ष करते हैं। श्रीलाल शुक्ल वैद्य जी के माध्यम से गाँव में भ्रष्ट राजनीति का वर्णन इस प्रकार करते हैं-"अंग्रेजों के जमाने में वे अंग्रेजों के लिये श्रद्धा दिखाते थे। देसी हुकुमत के दिन में वे देसी हाकिमों के लिये श्रद्धा दिखाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे।"[4]

भारतीय राजनीति में गुण्डागर्दी प्रमुख समस्या है। राजनीति में बड़ा कमीनापन चलता है। शिवपालगंज के स्थानीय नेता रूप्पन बाबू वैद्य जी से डण्डामार शैली में कहते हैं-"देखो दादा यह तो पालिटिक्स है। इसमें बड़ा-बड़ा कमीनापन चलता है। यह तो कुछ भी नहीं हुआ। पिता जी जिस रास्ते में हैं,उसमें आगे भी इससे कुछ कहना पड़ता है। दुश्मन को जैसे भी हो चित्त करना चाहिए।"[5]

किसी भी देश का राजनीतिक ढांचा उसके प्रशासन के द्वारा ही सुशोभित होता है। मकान उपन्यास का प्रमुख पात्र नारायण है। वह अपने मकान की दुर्दशा अफसर को बताता है। आप कोई भी कार्य कितने ही कायदे से क्यों न करें उसमें सिफारिश चलती ही है। ऊपर से फोन तक घनघनाते हैं। नारायण और पुत्तन बाबू के संबंध में अफसर कहते हैं-"एक एक मकान के लिये ऊपर से सत्तर- सत्तर सिफारिश आती हैं। दिल्ली से फोन तक घनघनाता है। मेरा सिद्धांत है कि सिफारिश मानना है तो आपकी सिफारिश मानूँगा। आप कुछ कहेंगे तो यहाँ की हालत समझकर कहेंगे। पर वी. आई. पी. को इससे क्या मतलब? तभी मैं वी.आई.पी.-शी.आई.पी.के चक्कर में नही पड़ता।"[6]

आजादी के बाद भारतीय लोकतंत्र ने विस्रामपुर के जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया गया है,उसका नजारा प्रशासनिक साहित्य में मिलता है। भारतीय राजनीति ने साहित्य को बुरी तरह से प्रभावित किया है। कानून तंत्र जनहित के तंत्र को तोड़ने लगा है। विस्रामपुर में आचार्य विनोबा भावे भूदान आंदोलन के प्रवर्तक हैं। वह जमींदारों से भूमि लेकर उसे भूमिहीनों को बांटना चाहते थे। उनका यह लक्ष्य खानापूर्ति तक रह गया था।

सुशीला विस्रामपुर में तीन दिन रही। वह भ्रष्ट शासन प्रणाली पर कानून के संबंध में कुँवर जयंती प्रसाद सिंह से कहती है-"देश में चारों ओर आज क्या हो रहा है? कुछ लोग पिछले पैंतीस साल से सारी व्यवस्था को क्रांति से,हिंसा से,आतंकवाद से बदलने की कोशिश कर रहे हैं। पर उसका नतीजा क्या है? हिंसा ने सिर्फ हिंसा को बढाया है। मूल व्यवस्था ज्यों की त्यों है। उधर सरकार के पास हर सामाजिक विकृति का सिर्फ एक इलाज है। कानून। जहाँ भी कोई विकृति दिखाई दे,एक नया कानून लागू करके नागरिक के पाँवों में एक और बेड़ी डाल दो। वे यह भूल जाते हैं कि आदमी की कुप्रवृत्ति को अगर सुधारने की कोशिश न की गयी तो उसकी एक चाल सारे कानूनी बदलाओं को मात दे देगी।"[7]

भारत एक गणराज्य है,जिसका प्रमुख आधार चुनाव है। भारतीय लोकतंत्र में चुनाव का महत्वपूर्ण स्थान है। चुनाव का पार्टी में अत्यधिक महत्व भी होता है। आज के राजनेताओं को समाज के सुख-दुख और रचनात्मक कार्यो से कोई लेना देना नहीं होता है। झूठे आश्वासन देकर वोट प्राप्त करना राजनेताओं का प्रमुख उद्येश्य रह गया है। राजधर किसी देशी पार्टी से संबंधित था। उसकी अवस्था पच्चीस वर्ष की थी। राजधर बी.ए.पास करने के बाद रियासत चला जाता है। तब कुछ दिनों बाद चुनाव होते हैं। चुनाव की दिशाहीनता के विषय में श्रीलाल शुक्ल कहते हैं-"राजधर की पार्टी क्या है,राजनीतिक सिद्धांत क्या हैं,रचनात्मक कार्य क्या हैं,इन सब प्रश्नों का उत्तर देना असंभव है,क्योंकि उसने स्पष्ट कहा,हम वाद के चक्कर में नहीं पड़ते। जिस प्रकार भी जनहित संभव हो उसे करना चाहिए। राज परंपराएं अब इस बीसवीं सदी में आउट आव डेट हो गई हैं। उन परंपराओं को समाप्त करके एक स्वररुप और सुदृढ शासन की व्यवस्था होनी चाहिए। इस उद्येश्य की पूर्ति के लिये हमें परिश्रमी,ईमानदार व्यक्तियों की आवश्यकता है,जैसे तुम।"[8]

आज राजनीति चुनाव और वोट पर आत्मनिर्भर है। राजनीति में वोट का महत्व बढ गया है। वोट के महत्व पर व्यंग्य कसते हुये सनीचर और वैद्य जी के विषय में श्रीलाल शुक्ल कहते हैं-"वोट की भिक्षा बड़े-बड़े नेताओं तक को विनम्र बना देती है। सनीचर तो सनीचर था। यह सुनते ही उसकी हेकड़ी ढीली पड़ गई और खीसें निकल आई।...बोला अरे हम तो नाम भर के प्रधान होंगे। असली प्रधान तो तुम वैद्य महाराज को समझो।...बस यही मानकर चलो कि तुम अपना वोट वैद्य जी को ही दे रहे हो। समझ लो कि खुद वैद्य जी तुमसे वोट की भीख माँग रहें हैं।...जब वैद्य जी वोट की भीख माँग रहें हैं तो मना कौन कर सकता है। हमें कौन वोट का अचार डालना है! ले जाएँ। वैद्य जी ही ले जाएँ। ...वोट साला कौन छप्पन टके की चीज है! कोई भी ले जाएँ।"[9]

वोट बैंक के लिये राजनीति में पैसा पानी की तरह बहता है। शांतिप्रकाश और जसवंत सिंह को नगर निगम के चुनाव में भ्रष्टाचार से अधिक महत्व मिलता है। इस संबंध में जसवंत बादशाह से कहता हैं-"आजकल तो चुनाव में मेरा रूपया पानी की तरह बह रहा है। पाँच-पाँच सौ रूपये की तो रोज शराब ही खर्च हो रही है। क्या समझे? सब समझ गया भाई साहब,यह चुनाव का खेल फटीचरों के नहीं हैं। बादशाह ने कहा।"[10]

शिक्षा मानव जीवन का प्रमुख अंग है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपनी राष्ट्र की उन्नति कर सकता है। शिक्षा आज व्यवसाय का अंग बन गई है। राजनीति की शुरुआत स्कूल,कालेज,विश्वविद्यालय से ही होती है। बड़े-बड़े राजनेता अपने स्वार्थ के लिये विद्यार्थियों को अपने जाल में फंसा लेते हैं। शिक्षा क्षेत्र में गुण्डागर्दी प्रमुख समस्या बनती जा रही है। शैक्षिक संस्थानों में हो रही गुण्डागर्दी के विषय में रुप्पन बाबू रंगनाथ से कहते हैं-"तुम जानते नहीं हो दादा इस देश की शिक्षा पद्धति बिल्कुल बेकार है। बड़े-बड़े नेता यही करते हैं। मैं उनसे सहमत हूँ। फिर तुम इस कालेज का हाल नहीं जानते। लुच्चों और शोहदों का अड्डा है। मास्टर पढाना-लिखाना छोड़कर सिर्फ पालिटिक्स भिड़ाते हैं। दिन-रात पिता जी नाक में दम किये रहते हैं कि यह करो,वह करो,तनख्वाह बढाओ,हमारी गरदन की मालिश करो। यहाँ भला कोई इम्तिहान में पास हो सकता है।"[11]

विस्रामपुर का संत' उपन्यास में गवर्नर कुँवर जयंती प्रसाद सिंह पदलोलुप व्यक्ति हैं। वह दिग्गज कांग्रेसी नेता हैं। उनके बड़े भाई राजा साहब समाजवादी नेता हैं। भूदान आंदोलन की सक्रियता के बारे पदलोलुपता का जिक्र करते हुये कुँवर जयंती प्रसाद सिंह के माध्यम से श्रीलाल शुक्ल कहते हैं-"तभी भूदान आंदोलन शुरु होने पर,कुँवर जयंती प्रसाद सिंह ने बड़े भाई के जेल प्रवास के दौरान ग्रामदान की घोषणा की। राजनीतिक खेल में यह शानदार छक्का था। इसका सर्वोदयी कार्यकर्ताओं में ही नहीं,सरकारी तंत्र में भी वाजिब असर हुआ। उनकी साख बढी,साथ ही खपत भी।"[12]

भारतीय राजनीति में गुटबंदी का रोग बहुआयामी रूप में दिखायी देता है। निश्चित रूप से राजनीति में गुटबंदी होती है। वैद्य जी आयुर्वेद के रूप में गुटबंदी करते हैं। गुटबंदी में मैं-मैं,तू-तू होती है। आयुर्वेद से गुटबंदी की तुलना करते हुये श्रीलाल शुक्ल कहते हैं-"गुटबंदी परात्मानुभूति की चरम दशा का एक नाम है। उसमें प्रत्येक तू,मैं को और प्रत्येक मैं,तू को अपने से ज्यादा अच्छी स्थिति में देखता है। वह उस स्थिति को पकड़ना चाहता है। मैं,तू और तू मैं को मिटाकर मैं की जगह तू और तू की जगह मैं बन जाना चाहता है।"[13]

समन्वित अनुशीलनः-

हिंदी साहित्य के बेजोड़ व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल ने अपने समय की राजनीतिक चेतना को करीबी से देखा और उसे अपने व्यंग्यमयी कलम से सुयश बनाया। उन्होंने बेबाक और निर्भीक होकर उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना पर व्यंग्य किया है। इस प्रकार श्रीलाल शुक्ल ने उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना का अत्यंत सूक्ष्मता और विस्तार से वर्णन किया है।

संदर्भः-

1. आर.विज .पी .,नागरिक शास्त्र के सिद्धांत और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन,पृ .128

2. डॉपरमात्मा शरण .,तुलनात्मक शासन और राजनीति,पृ .11

3. राग दरबारी,श्रीलाल शुक्ल,पृ .17

4. वही,पृ .31

5. वही,पृ .148

6. मकान,श्रीलाल शुक्ल,पृ .95

7. विस्रामपुर का संत,श्रीलाल शुक्ल,पृ .164

8. सूनी घाटी का सूरज,श्रीलाल शुक्ल,पृ .125

9. राग दरबारी,श्रीलाल शुक्ल,पृ .200

10. आदमी का जहर,श्रीलाल शुक्ल,पृ .105

11. राग दरबारी,श्रीलाल शुक्ल,पृ .31

12. विस्रामपुर का संत,श्रीलाल शुक्ल,पृ .85

13. राग दरबारी,श्रीलाल शुक्ल,पृ .78

****